# क्या आप चार आध्यात्मिक नियम जानते है ?

# Have you heard of the Four Spiritual Laws?

Hindi - English edition

जिस प्रकार भौतिक नियम है जो भौतिक संसार को नियंत्रित करते है, उसी प्रकार आध्यात्मिक नियम भी है, जो परमेश्वर के साथ आपके संबंध को नियंत्रित करते है।

Just as there are physical laws that govern the physical universe, so are there spiritual laws which govern your relationship with God.

# 1 नियम ऐक

# LAW ONE

परमेश्वर आपको प्रेम करते है, और आपके जीवन के लिए उनकी अद्भुत योजना है।

GOD **LOVES** YOU AND OFFERS A WONDERFUL **PLAN** FOR YOUR LIFE.

# परमेश्वर का प्रेम

# GOD'S LOVE

*क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई विश्वास करें व नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए। ( यूहन्ना 3:16)*

*"God so loved the world that He gave His one and only Son, that whoever believes in Him shall not perish, but have eternal life." (John 3:16)*

(इस होम पेज में दिये गए प्रसंग जहाँ तक संभव हो बाइबल में से पंढे)

(References contained in this booklet should be read in context from the Bible whenever possible)

# परमेश्वर की योजना

# GOD'S PLAN

*( यीशु ने कहाँ) मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाएँ, और बहुतायत से पाएँ। ( ताकि उसमें संपूर्णता योजना हो - यूहन्ना 10:10)*

[Christ speaking] *"I came that they might have life, and might have it abundantly"* [that it might be full and meaningful]. *(John 10:10)*

क्या कारण है कि अधिक लोग बहुतायत के जीवन का अनुभव नही करते ? क्योंकि..

Why is it that most people are not experiencing the abundant life? Because…

DELHI
GUEST
SKIN HAIR NAILS CLINIC

# 2

## नियम दो

## LAW TWO

मनुष्य ने पाप किया और वह परमेश्वर से पृथक हो चुका है, इसलिए वह परमेश्वर के प्रेम तथा अपने जीवन के लिए उनकी योजना को न जान सकता है और न ही अनुभव कर सकता है।

PEOPLE ARE **SINFUL** AND **SEPARATED** FROM GOD SO WE CANNOT KNOW AND EXPERIENCE GOD'S LOVE AND PLAN FOR OUR LIFE.

# मनुष्य पापी है
# PEOPLE ARE SINFUL

*इसलिए की सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है। (रोमियों 3:23)*

*"All have sinned and fall short of God's glorious standard." (Romans 3:23)*

# मनुष्य अलग हो चुका है
# PEOPLE ARE SEPARATED

मनुष्य को इसलिए रचा गया कि वह परमेश्वर की संगति में रहें, परन्तु अपनी ज़िद व स्वेच्छा के कारण उसने अपनी स्वतंत्रता से इच्छा पूरी करना चुन लिया और उसका परमेश्वर से संबंध टूट गया। यह स्वेच्छा जो विरोध अथवा उपेक्षा के रुप में प्रगट होती है, बाइबल में लिखे पाप का यह प्रमाण है।

We were created to have a personal relationship with God, but by our own choice and self-will we have gone our own independent way and that relationship has been broken. This self-will, often seen as an attitude of active rebellion towards God or a lack of interest in Him, is an evidence of what the Bible calls sin.

# मनुष्य पृथक है

# PEOPLE ARE SEPARATED FROM GOD

*क्योंकि पाप का फल तो मृत्यु है - परमेश्वर से आध्यात्मिक अलगाव।( रोमियों 6:23)*

*"The wages of sin is death"* [spiritual separation from God]. *(Romans 6:23)*

यह चित्र यह दर्शाते है कि परमेश्वर पवित्र और मनुष्य पापी है। परमेश्वर से अलग होने के कुछ परिणाम - एक विशाल खाइ दोनों को पृथक करती है। मनुष्य अपने अच्छे कर्मों, सिद्धान्तों व दर्शनों इत्यदि के माध्यम से अनन्त जीवन तक पहुँचने के लिए सतत कोशिश करता है परन्तु उसकी कोशिश निष्फल ठहरती है।

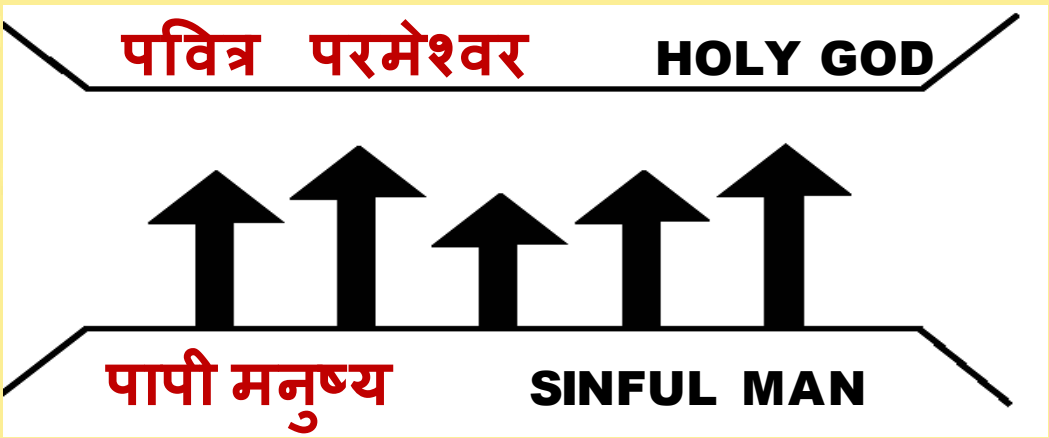


This picture illustrates that God is holy and people are sinful. A great gap separates the two. The arrows illustrate that people are continually trying to reach God and the abundant life through their own efforts, such as a good life, philosophy, or religion – but they always fail.

मनुष्य के इस पवित्र दुवीधा का एकमात्र हल तीसरा नियम देता है..... The third law explains the only way to bridge this gap…

# 3

## नियम तीन

## LAW THREE

यीशु मसीह ही मनुष्य के उद्धार के लिए परमेश्वर से दिया हुआ एकमात्र साधन है। उनके द्वारा आप परमेश्वर के प्रेम व उनकी जो आपके जीवन के लिए योजना है उसे जान तथा अनुभव कर सकते है।

JESUS CHRIST IS GOD'S **ONLY** PROVISION FOR OUR SIN. THROUGH HIM YOU CAN KNOW AND EXPERIENCE GOD'S LOVE AND PLAN FOR YOUR LIFE.

# वे हमारे लिए मरे

# HE DIED IN OUR PLACE

*परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है की जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा।( रोमियों5 :8)*

*"God demonstrates His own love towards us, in that while we were yet sinners, Christ died for us." (Romans 5:8)*

# वे मरे हुओं में से जी भी उठे

# HE ROSE FROM THE DEAD

*मसीह हमारे पापों के लिए मर गए.... वे गाडे गए... और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठे और कैफा को तब बारहों को दिखाई दिए। फिर पाँच सौ से अधिक भाइयों को एक साथ दिखाई दिए.... I (1 कुरि.15:3-6)*

*"Christ died for our sins…He was buried…He was raised on the third day, according to the Scriptures…He appeared to Peter, then to the twelve. After that He appeared to more than five hundred…" (1 Corinthians 15:3-6)*

# वे ही एक मार्ग है

# HE IS THE ONLY WAY TO GOD

*यीशु ने उन से कहाँ मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नही पहुँच सकता।( यूहन्ना 14:6)*

*"Jesus said to him, 'I am the way, and the truth, and the life; no one comes to the Father, but through Me'." (John 14:6)*

जो खाइ हमें परमेश्वर से पृथक करती थी उसे उन्होंने अपने पुत्र यीशु के द्वारा मिला दिया जो सलीब पर हमारे स्थान पर मरे।

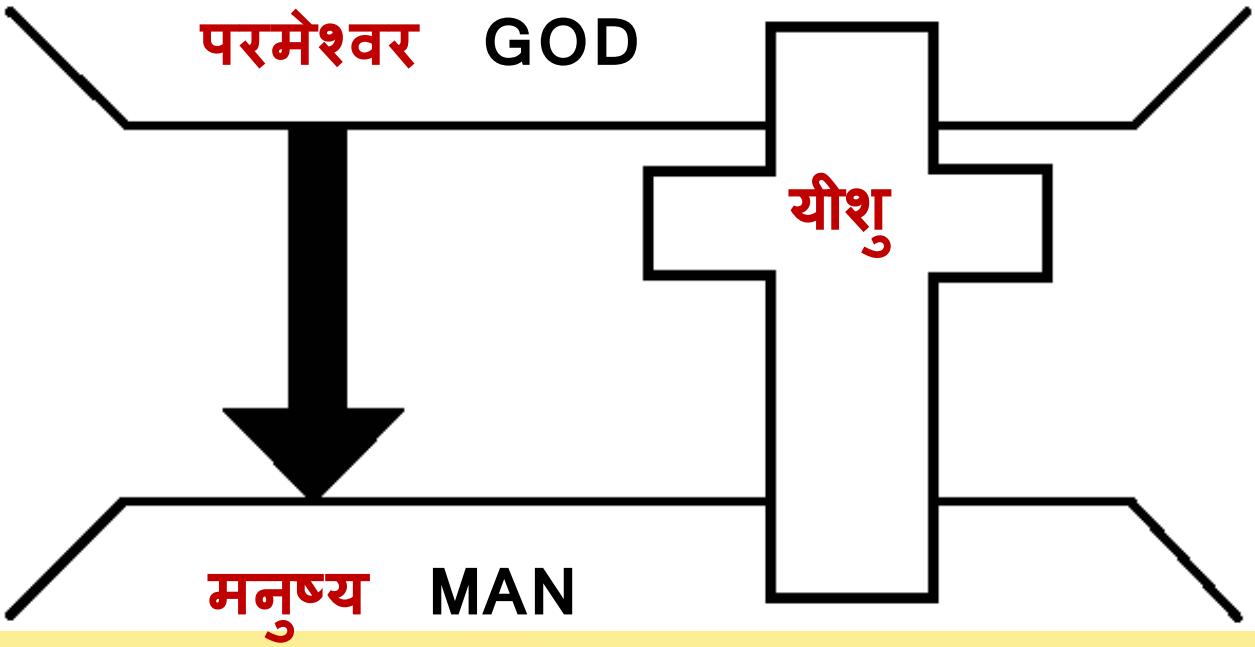


This picture illustrates that God has bridged the gap which separates us from Him by sending His Son, Jesus Christ, to die on the cross in our place to pay the penalty for our sins.

It is not enough just to know these three laws…

यह तीन नियम जान लेना ही पर्याप्त नही है.....

# 4

## नियम चार

## LAW FOUR

व्यक्तिगत रूप से यीशु मसीह को अपना मुक्तिदाता वह प्रभु स्वीकार करना आवश्यक है। तब हम परमेश्वर के प्रेम तथा उनकी हमारे जीवन के लिए योजना जान सकते है।

WE MUST INDIVIDUALLY **RECEIVE** JESUS CHRIST AS SAVIOUR AND LORD; THEN WE CAN KNOW AND EXPERIENCE GOD'S LOVE AND PLAN FOR OUR LIVES.

# हमारे लिए यीशु को ग्रहण करना आवश्यक है

# WE MUST RECEIVE CHRIST

*परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।( यूहन्ना 1:12)*

*"As many as received Him, to them He gave the right to become children of God, even to those who believe in His name." (John 1:12)*

# हम यीशु को विश्वास द्वारा स्वीकार करते है

# WE RECEIVE CHRIST THROUGH FAITH

*क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से आपका उद्धार हुआ है; और यह आपकी ओर से नही , वरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमंड करें।*

*(इफिसियों 2:8,9)*

*"By grace you have been saved through faith; and that not of yourselves, it is the gift of God; not as a result of works, that no one should boast." (Ephesians 2:8,9)*

जब हम मसीह को स्वीकार करते है, तो हम नया जन्म प्राप्त करते है (यूहन्ना 3:1-8 पंढे) **WHEN WE RECEIVE CHRIST THEN WE RECEIVE NEW LIFE (READ JOHN 3:1-8)**

# हम यीशु को स्वीकार करने के लिए व्यक्तिगत निमंत्रण देते है

# WE RECEIVE CHRIST BY PERSONAL INVITATION

*( यीशु का आपको व्यक्तिगत निमंत्रण) देख मैं द्वारा पर खडा हुआ खटखटाता हूँ, यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करुँगा और वह मेरे साथ।( प्रकाशित वाक्य 3:20)*

[Christ is speaking] *"Behold, I stand at the door and knock; if any one hears My voice and opens the door, I will come in to him." (Revelation 3:20)*

यीशु को स्वीकार करने का अर्थ है अहं की ओर से परमेश्वर की ओर फिरना, विश्वास करना कि यीशु हमारे जीवन में आएंगे, हमारे पापों को क्षमा करेंगे और हम जो चाहेंगे वह हमें बनाएगा। उन के दावो पर बोधिक सहमति देना अथवा भावत्मक अनुभव प्राप्त करना पर्याप्त नही है बल्कि हम यीशु मसीह को क्रिया के स्वरूप में विश्वास के द्वारा प्राप्त करते है।

Receiving Christ involves turning to God from self (repentance) and trusting Christ to come into our lives to forgive our sins and to make us what He wants us to be. Just to agree **intellectually** that Jesus Christ is the Son of God and that He died on the cross for our sins is not enough. Nor is it enough to have an **emotional** experience. We receive Jesus Christ by **faith**, as a decision of our **will.** :

# ये दो वृत दो प्रकार के जीवनों का प्रतिनिधित्व करते

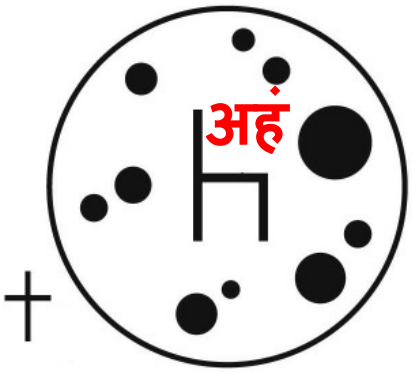


अहं - अहं द्वारा नियंत्रित जीवन

अहं अथवा सीमित में अधीन

अहं द्वारा नियंत्रित रुचियाँ जो कलह व निराशा उत्पन्न करती है

यीशु - जीवन के बाहर।

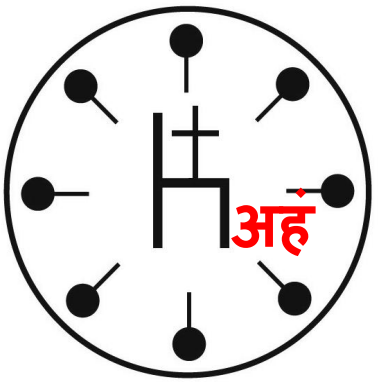


यीशु-यीशु द्वारा नियंत्रित जीवन

जीवन के सिंहासन पर यीशु

अहं - यीशु के अधीन है

असीम परमेश्वर द्वारा नियंत्रित रुचियाँ जिनके परिणाम स्वरूप परमेश्वर की योजना के साथ सामंजस्य।

# THESE TWO CIRCLES REPRESENT TWO KINDS OF LIVES

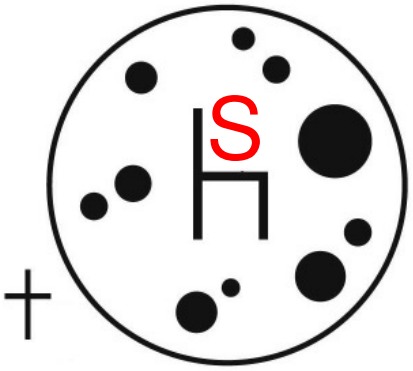


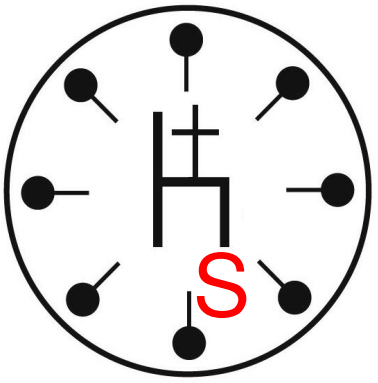


## SELF-DIRECTED LIFE

S – Self is on the throne.

† – Christ is outside the life.

• – Interests are directed by self, often resulting in discord and frustration.

## CHRIST-DIRECTED LIFE

† – Christ is in the life and on the throne.

S – Self is yielding to Christ.

• – Interests are directed by Christ, resulting in harmony with God's plan.

# कौनसे वृत आपके जीवन को दर्शाते है ?

## आप अपने जीवन का प्रतिनिधित्व करने के लिए कौनसा वृत लेना चाहेंगे ?

**Which circle best describes your life?**
**Which circle would you like to have represent your life?**

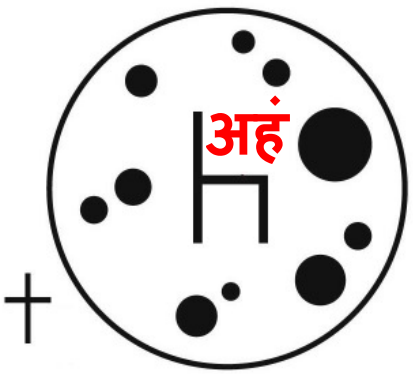


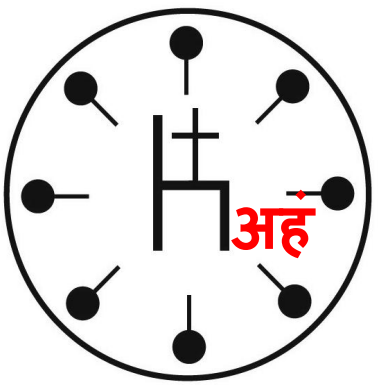


निम्नलिखित वर्णन से ज्ञात होता है कि आप यीशु को कैसे ग्रहण कर सकते है।

The following explains how you can receive Christ:

## आप इसी क्षण यीशु को प्रार्थना के माध्यम से ग्रहण कर सकते है।

## YOU CAN RECEIVE CHRIST RIGHT NOW BY FAITH THROUGH PRAYER

(प्रार्थना परमेश्वर के साथ वार्तालाप है)

**(Prayer is talking to God)**

परमेश्वर आपके मन को जानते है और वह आपके शब्दों में उतनी रुचि नही लेते जितना आपके मन में। निम्नलिखित प्रार्थना का उदाहरण देखिए।

God knows your heart and is not so concerned with your words as He is with the attitude of your heart. Here is a suggested prayer:

प्रार्थना.....प्रभु यीशु मुझे आपकी आवश्यकता है। मेरे पापों के लिए क्रूस पर मरने के लिए धन्यवाद मैं अपने जीवन के द्वार खोलकर आपको अपने प्रभु और मुक्ति दाता के रूप में स्वीकार करता हूँ। मेरे सारे पापों को क्षमा करने के लिए और मुझे अनन्त जीवन देने के लिए आप को धन्यवाद। मेरे जीवन के सिंहासन पर अपना नियंत्रण रखे जैसा मनुष्य आप मुझे बनाना चाहते है वैसा ही बनाए - आमीन।

**"Lord Jesus, I need You. Thank You for dying on the cross in my place for my sins. I open the door of my life and receive You as my Saviour and Lord. Thank You for forgiving me of my sins and giving me eternal life. Take control of the throne of my life. Make me the kind of person You want me to be."**

**क्या यह प्रार्थना आपके हृदय की इच्छा को प्रगट करती है ?**

Does this prayer express the desire of your heart?

यदी हाँ तो आप इस समय यह प्रार्थना कीजिए व यीशु अपनी प्रतिसा के अनुसार आपके जीवन मे आएगे

If it does, pray this prayer right now, and Christ will come into your life, as He promised.

# आप परमेश्वर को आपने उद्धारकर्ता स्वीकार किया है तो वह अब आप का हृदय में ही है।

# HOW TO KNOW THAT CHRIST IS IN YOUR LIFE

आप परमेश्वर की वायदा पडिए प्रकाशितवाक्य 3.20. आप मसीहा के साथ किस रीति से रिश्ता जुडा है ?

Did you receive Christ into your life? According to His promise in Revelation 3:20, where is Christ right now in relation to you?

आप परमेश्वर को आपने उद्धारकर्ता स्वीकार किया है तो वह अब आप का हृदय में ही है। यीशु ने कहा कि वह आप का जीवन मे आएगा। वह आपको भटकाएगा क्या ?

Christ said that He would come into your life. Would He mislead you?

कैसे जान जाये यीशु आपके जीवन मे है

On what authority do you know that God has answered your prayer?

यीशु सही परमेश्वर है तो, वह मनुष्य के जैसे हम से झूठ नही बोल सकते। (तीतुस 1.1-2) वह विश्वास करने के लिए योग्य परमेश्वर है, वह खुद और उनकी वचन आपका प्रार्थना को जरूर जवाब देगा। The trustworthiness of God Himself and His Word, the Bible (Titus 1:1-2).

# बाइबल का सारे वायदें अनन्त जीवन है

# THE BIBLE PROMISES ETERNAL LIFE

*यह गवा ऐसा है, परमेश्वर हमें अनन्त जीवन दीया है, और वो जीवन यीशु में है। जिन में यीशु है उन में जीवन है। जिन में यीशु नही है उन में जीवन नही है। और वह गवाही यह है, कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है, और यह जीवन उसके (पुत्र) यीशु में हैं। 1 यूहन्ना 5.11-13.*

*"The witness is this, that God has given us eternal life, and this life is in His Son. He who has the Son has the life; he who does not have the Son of God does not have life. These things I have written to you who believe in the name of the Son of God, in order that you may know that you have eternal life." (1 John 5:11-13)*

परमेश्वर की स्तुति हो कि आप जीवन में मसीहा है और वह कभी न छोडेगा ( इब्रानियों 13.5)। वायदा के मुताबिक वह आप में वास करर्ता है और आप उसे आप में बुलाने हर समय आप अनन्त जीवन पाते है। वह आपको कभी धोखा न देगा।

Thank God often that Christ is in your life and that He will never leave you (Hebrews 13:5). You can know on the basis of His promise that Christ lives in you and that you have eternal life from the very moment you invite Him in. He will not deceive you.

एक प्रामुख्य याद दिलाना...

An important reminder …

आप के भावनाएँ पर निर्भर न करें।

## DO NOT DEPEND ON FEELINGS

परमेश्वर का वायदाओं और बाइबल के वचनों पर अपना भावनाएँ नही बल्कि अपना अधिकार है। एक मसीहा व्यक्ति विश्वास योग्य परमेश्वर और उनकी वचन के भरोसा से जीते है। यह रेल चित्र हमें सच्छाई (परमेश्वर और उन की वचन), विश्वास(अपना भरोसा परमेश्वर पर और उनकी वचनों पर), और भावनाएँ (विश्वास की परिणाम और आज्ञा पालन करना) यूहन्ना 14.21.

The promise of God's Word, the Bible – not our feelings – is our authority. The Christian lives by faith (trust) in the trustworthiness of God Himself and His Word. This train diagram illustrates the relationship between fact (God and His Word), faith (our trust in God and His Word), and feeling (the result of our faith and obedience). (John 14:21)

रेल पट्ठी या मार्ग के बिना रेल नही चल सकती। परन्तु पट्ठी पर खेडे हुए रेल गाडी को खींचना भी व्यर्थ है। वैसे ही, मसीह के लोग भी अपने मन भावनाओं और चित्त वृत्ति पर निर्भर नही होना चाहिए परन्तु विश्वास योग्य परमेश्वर और उनकी वायदा के वचन पर अपना विश्वास करने के लिए जगा देना चाहिए।

The train will run with or without a passenger car. However, it would be useless to attempt to pull the train by the passenger car. In the same way, as Christians we do not depend on feelings or emotions to decide what is true, but we place our faith (trust) in the trustworthiness of God and the promises of His Word.

# अब आप मसीहा को स्वीकार किया है

# NOW THAT YOU HAVE RECEIVED CHRIST

विश्वास के मसीहा को स्वीकार करते समय, बहुत कार्य हो सकता है, नीचे दिए गए के साथ।

The moment that you received Christ by faith many things happened, including the following:

1. मसीहा आपका जीवन में आया हैं ( प्रकाशितवाक्य 3.20, कुलुस्सियों 1.27)
   Christ came into your life. (Revelation 3:20 ; Colossians 1:27)
2. आप का पाप सब क्षमा किया गया हैं। (कुलुस्सियों 1:14) Your sins were forgiven. (Colossians 1:14)

3. आप परमेश्वर के संतान बन चुके हैं (यूहन्ना 1.12) You became a child of God. (John 1:12)
4. आप अनन्त जीवन पाया हैं। आप सृष्टिकर्ता परमेश्वर का साहस कार्य आरंभ किया है(यूहन्ना 10.10, 2 कुरिन्थियों 5.17, 1 थिस्सलुनिकियों 5.18). You began the great adventure for which God created you. (John 10:10; 2 Corinthians 5:17; 1 Thessalonians 5:18)

आप सोचिए कि कुछ ऐसा अद्भुत काम हुआ है मसीहा को अपनाने से पहले ? आपका जीवन में किए हुए भलाई के लिए आप अब परमेश्वर को धन्यवाद करना चाहते है ? धन्यवाद करते हुए आपका विश्वास को हमें अवश्य बताइए या निरुपण कीजिए।

Can you think of anything more wonderful that could happen to you than receiving Christ? Would you like to thank God in prayer right now for what He has done for you? By thanking God, you demonstrate your faith.

# मसीहा मे उन्नति के लिए सूचनाएँ

# SUGGESTIONS FOR CHRISTIAN GROWTH

यीशु मसीह पर विश्वास करने से आत्मिक उन्नति बढ़ सकते है। धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा। (गलातियों 3.11) यह विश्वास जीवन आपको परमेश्वर पर भरोसा बढाते है साथ ही साथ उसे नीचे दिए गए वाक्य पर असर डालते हैं।

Spiritual growth results from trusting Jesus Christ. "The righteous man shall live by faith" (Galatians 3:11). A life of faith will enable you to trust God increasingly with every detail of your life, and to practice the following:

1. हर दिन प्रभु की प्रार्थना करें (यूहन्ना 15.7) **G**o to God in prayer daily. (John 15:7)

2. हर दिन परमेश्वर का वचन पड़े (प्रेरितों के काम 17.11) यूहन्ना सुसमाचार से शुरू करें। **R**ead God's Word daily (Acts 17:11); begin with the Gospel of John.

3. हर पल परमेश्वर की आज्ञा पालन करें। **O**bey God moment by moment. (John 14:21)

4. आपके जीवन के द्वारा और बोलने के व्दारा गवाही बनना। (मत्ति4.19, यूहन्ना 15.8) **W**itness for Christ by your life and words. (Matthew 4:19; John 15:8)
5. आपके हर कोणे में परमेश्वर पर विश्वास करें (1 पतरस 5.7) **T**rust God for every detail of your life. (1 Peter 5:7)
6. पवित्र आत्मा – उसे स्वीकार कीजिए कि आपके जीवन में राज्य और नियंत्रन करे और उसे गवा बन सके। (गलातियों 5:16,17 ;प्रेरितों के काम 1:8) **H**oly Spirit – allow Him to control and empower your daily life and witness. (Galatians 5:16,17; Acts 1:8)

# एक अच्छी मण्डली की महता

# FELLOWSHIP IN A GOOD CHURCH

इब्ानियों 10:25 में हमें आज्ञा दी गई है की हम एक दुसरे की संगति एकथ होना न छोडे... The Bible tells us the importance of meeting together with other Christians (Hebrews 10:25).

अधिक लकडिया मिलकर अच्छा जलती है, परन्तृ ठण्डे चुल्हें पर एक अलग निलकर रख देतो आग बुज जाती है. अन्य मसीहियों के साथ भी अपका ऐसा ही सम्बन्ध है. यदि आप किसी मण्डली के साथ नही है, तो किसी निमन्त्रण की प्तिक्षा ना करे. पहल आप करे व पास के मण्डली, जहाँ मसीह यीशु को सम्मन दिया जाता हो और उसके वचन का प्रचार कि या जाता हो और जहाँ

Have you ever watched a fire burning in a fireplace? Several logs together burn brightly. But if you pull one log away from the fire, its flame soon goes out. The same thing happens to us if we do not spend time with other Christians. Attend a church where Christ is talked about and the Bible is taught. Start this week and make plans to attend regularly.

के पादरी साहब से मिले. ईसी सप्ताह यह काम आरम्भ तथा नियमित रुप से भाग लेने की योंजना बनाईए.

Do you want to tell your experience to others?

## अधिक सहायर्ता चाहीए.

## WANT FURTHER HELP?

परमेश्वर की संगति में रहने केलिए सहायर्ता आव्यसकता होतो नीचे दिए गए वैबसाईट पर जाईए

- www.hereslife.info/connect
- MyLanguage.net.au
- GodLife.com

This article is also available in many other languages from www.hereslife.com/tracts.

Written by Bill Bright. © 2011 Bright Media Foundation and Campus Crusade for Christ, Inc. Previously © 1965-2002 CCC. All rights reserved. No part of this booklet may be changed in any way or reproduced in any form or stored or transmitted by computer or electronic means without written permission from Campus Crusade for Christ.